आचार्य नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारधारा की प्रासंगिकता एक ऐतिहासिक अध्ययन

डॉ. रूपम कुमारी

आचार्य नरेन्द्रदेव 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ के तीन दशकों में रूसी क्राँति के अनन्य प्रशंसक रहे, जहाँ लेनिनवाद की हिंसा तथा संघर्ष की तकनीक भारत में महात्मा गाँधी की पूर्ण अहिंसात्मक नीति से कहीं प्रभावशाली रही थी। गाँधीवादी विधियॉ दो–दो सविनय अवज्ञा आन्दोलनों के असफल हो जाने के कारण क्षीण हो रही थी। इन दो तकनीकों के द्वन्द में सही तकनीक चुनने की दुविधा में आचार्य जी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब रूस की तरह पिछड़े आर्थिक दशावाला देश मार्क्सवादी लेनिनवादी तकनीक अपनाकर प्रगति के पथ पर तीव्रता से अग्रसर हो सकता है तो भारत में भी वैसा होना सम्भव है। इस प्रकार आचार्य जी भारत के आर्थिक विकास के लिए गाँधीवादी तकनीक के स्थान पर मार्क्सवादी लेनिनवादी तकनीक अपनाने पर जोर देते थे। आचार्य जी यह स्वीकार करते थे कि ''पुरानी आर्थिक प्रणाली का नाश करके उसके स्थान पर नयी आर्थिक प्रणाली कायम करना एक ऐसी घटना है, जो कि मामूली सुधारवाद के रास्ते से नहीं हो सकती। समाज के ढाँचे में आधारभूत परिवर्तन की ऐतिहासिक आवश्यकता क्रॉन्ति द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। पर वे सुधार को क्रान्ति का आवश्यक अंग समझते हैं तथा नूतन समाजवादी समाज के निर्माण के लिए संघर्ष के साथ ही क्रान्तिकारी रचनात्मक कार्य भी आवश्यक समझते हैं। आचार्य जी के व्यक्तित्व की विशेषता इस बात में है कि वे जीवन के अन्तिम समय तक अपने विचारों में सामाजिक क्रान्ति के प्रबल समर्थक रहे तथा उनके चिन्तन में प्रतिक्रियावाद के लिए कोई स्थान नहीं है। उनके व्यक्तित्व में मौलिक चिन्तन की क्षमता है तथा वे मार्क्सवादी लेनिनवादी विचारों में नवीन सूत्र जोड़ने की क्षमता रखते हैं। इसीलिये कहा जाता है कि उन्होंने मार्क्सवाद लेनिनवाद को भारतीय संस्कार देने का सत्कार्य किया।